आभार

प्रथमतः, अंततः, और सर्वदा, मैं अभिस्वीकार करता हूं, आभार मानता हूं हर उस बात के स्रोत के प्रति जो इस किताब में है, जो जीवन में है – और आभार स्वयं जीवन के प्रति भी।

दूसरे, मैं अपने आध्यात्मिक गुरुओं का धन्यवाद करना चाहता हूं जिनमें सभी धर्मों के संत व ज्ञानी जन शामिल हैं।

तीसरे, यह मैं साफ़ तौर पर देख सकता हूं कि हम में से हर कोई ऐसे लोगों की एक सूची बना सकता है जिन्होंने हमारे जीवन को छुआ है – कई तरह से, इतने सार्थक रूप से, इतनी गहराई से छुआ है कि हम उसका वर्गीकरण और विवरण नहीं कर सकते, हर कोई ऐसे लोगों की सूची बना सकता है जिन्होंने अपनी प्रज्ञा को हमारे साथ साझा किया है, अपना सत्य हमें बताया है, अपने असीम धैर्य के साथ हमारी गलतियों व खामियों को सहन किया है, और जिन्होंने इन गलतियों व खामियों के बावजूद भी हमारे पार देखा है, हम में हमारा सर्वोत्तम रूप देखा है। उन लोगों के प्रति आभार जिन्होंने हमें स्वीकार किया, हमारे उन अंशों को अस्वीकार करते हुए हमें स्वीकार किया जिन्हें वे समझते थे कि वे हमारे द्वारा चुने नहीं गए थे, क्योंकि ऐसे लोगों के कारण ही हमने विकास किया है, और हम बेहतर होते गए हैं।

मेरे माता-पिता के अलावा इस प्रकार के लोगों में जो अन्य लोग शामिल रहे हैं वे हैं – समंथा गोर्स्की, टरा-जेनेले वाल्श, वायने डेविस, ब्रयान वाल्श, मारथा राइट, स्व. बेन विल्स, जू., रोनाल्ड चैंबर्स, डेन हिग्स, सी. बैरी कार्टर (द्वितीय), एलेन मोएर, ऐनि ब्लैकवेल, डौन डांसिंग फ्री, एड केलर, लिमन डब्लू. (बिल) गृस्वोल्ड, एलीज़ाबेथ कुबलर रौस, और प्रिय टैरी कोल-व्हीटकर।

इस वर्ग में मैं अपने पूर्व साथियों को भी शामिल करना चाहता हूं लेकिन उनकी निजता का सम्मान करते हुए मैं उनका नाम यहां दे नहीं रहा हूं – लेकिन मेरे जीवन में दिए गए उनके योगदान को मैं गहराई तक अनुभव करता हूं और उसका सम्मान करता हूं।

जिन अद्‌भुत लोगों से मैंने ये उपहार पाये हैं, उनके प्रति आभार अनुभव करते हुए जिस एक व्यक्ति के प्रति मेरा मन विशेष गरमजोशी महसूस करता है वह है मेरी मददगार, मेरी शरीके-हयात, मेरी पत्नी नैन्सी फ्लेमिंग वाल्श – एक ऐसी महिला जिसमें असाधारण प्रतिभा है, करुणा व प्रेम है, और जिसने मुझे बताया है कि मानव सम्बन्धों के बारे में मेरे सर्वोत्तम विचार कोई काल्पनिक बातें नहीं हैं बल्कि वे ऐसे सपने हैं जो सच हो सकते हैं।

और अंत में, मैं ऐसे कुछ लोगों का भी सम्मान करना चाहता हूं जिनसे मैं कभी मिला तो नहीं हूं लेकिन जिनके जीवन ने और कार्यों ने मुझ पर इतना सशक्त प्रभाव डाला है कि मैं इस अवसर पर उन्हें अपने अंतरतम की गहराई से आभार प्रकट किए बिना रह नहीं पा रहा हूं – उन पलों के लिए जो मुझे अति उत्तम व सूक्ष्म आनंद देने वाले रहे, मानवी दशा को अंतर्दृष्टि देने वाले रहे, और विशुद्ध व सरल जीवन-अनुभूति देने वाले रहे।

क्या आप जानते हैं कि तब कैसा लगता है जब कोई आपको ऐसे शानदार लमहे का एहसास करा दे, उस पल का स्वाद चखा दे जो कि आपके जीवन का वास्तविक सत्य हो? मेरे लिए ऐसे अधिकांश लोग वे रहे हैं जो किसी न किसी रूप में रचनाकार रहे हैं, या किसी न किसी कला के कारक रहे हैं, क्योंकि कला से ही मुझे प्रेरणा मिलती रही है, चिंतन-मनन के पलों में मैं उसी की शरण में जाया करता हूं, और मैंने पाया है कि जिसे हम ईश्वर कहते हैं वह सबसे अधिक खूबसूरती से उसी में अभिव्यक्त हुआ करता है।

और इसीलिए, मैं जॉन डेनवर का धन्यवाद करना चाहता हूं जिनके गीत मेरी आत्मा को छूते हैं और इस नई आशा का उसमें संचार कर देते हैं कि जीवन कैसा हो सकता है; रिचर्ड बैच का धन्यवाद जिनका लेखन मेरे जीवन में इस तरह उतर गया है जैसे कि वह मेरा ही लेखन हो, और मेरे ही अनुभवों को अभिव्यक्त कर रहा हो; बारबरा स्ट्रेसंड का धन्यवाद जिनके निर्देशन, अभिनय और संगीतपूर्ण कलात्मक निपुणता बारंबार मेरे हृदय को अपने आग़ोश में लेती रही है और मुझे अनुभव कराती रही है कि सत्य क्या है, न कि यह कि सत्य को मात्र जानना क्या है; और स्वर्गीय रॉबर्ट हेनलें का भी धन्यवाद जिनके दिव्यदर्शी साहित्य ने मेरे मन में प्रश्न कुछ इस तरह उठाए और उत्तर भी कुछ इस तरह पेश किए कि किसी और ने ऐसा करने का कभी साहस नहीं किया है।

मेरी मां
ऐने एम. वाल्श को
जिन्होंने मुझे न केवल यह बताया कि ईश्वर है,
बल्कि इस अद्‌भुत सत्य को भी मेरे में उतारा
कि ईश्वर ही मेरा परम मित्र है;
जो मेरे लिए मां से भी बढ़ कर बहुत कुछ थीं,
वह मेरे लिए सचमुच कल्याणी थीं।
मां से मिलना
पहली बार किसी देवदूत से मिलने जैसा था।

और
मेरे पिता
अलेक्स एम. वाल्श को
जो जीवन भर मुझसे कहते रहे
"डरने की कोई बात नहीं है",
"कुछ करना है तो 'ना' सुन कर हथियार मत डाल दो",
"अपना भाग्य खुद बनाओ",

और
"जहां से तुम्हें अब तक मिला है वहां अभी बहुत कुछ है।"
उनसे ही मैंने सबसे पहले
निर्भयता का पाठ सीखा था।

अनुवादक की ओर से

अध्यात्म के आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक, और सुकरात से लेकर जे. कृष्णमूर्ति तक, जिस एक बात पर बहुत अधिक बल दिया गया है वह है – 'स्वयं को जानो'। स्वयं को जानने के बारे में कहीं-कहीं थोड़ा-बहुत बताया भी गया है। लेकिन, स्वयं को कैसे जाना जाए, इस विषय पर जितना विशद वर्णन इस किताब में किया गया है, उतना शायद अन्यत्र नहीं। इस किताब में ईश्वर ने इंसान को आईना दिखाया है, वाक़ई।

लेखक और ईश्वर के बीच हुई यह बातचीत केवल लेखक के लिए ही नहीं थी, बल्कि हर जिज्ञासु के लिए है। इस बात को ईश्वर स्वयं कुछ इस तरह कहता है कि इस किताब के जरिए – "मैं न केवल तुमसे बात कर रहा हूं बल्कि हर उस व्यक्ति से बात कर रहा हूं जिसने कि यह किताब उठाई है और जो इन शब्दों को पढ़ रहा है।"

सचमुच, इस किताब को पढ़ते हुए हर पाठक यही महसूस करेगा कि वह स्वयं ईश्वर से बातचीत कर रहा है, क्योंकि इस किताब में लेखक ने ईश्वर के बारे में और जीवन के बारे में वे तमाम गूढ प्रश्न उठाए है जो हर किसी के – आपके व मेरे – मन में अक्सर उठा करते हैं, और ईश्वर ने उन सभी प्रश्नों के आश्चर्यजनक उत्तर भी दिए हैं। हालांकि विषय गूढ़ है लेकिन उसे यथासंभव सरल अनुवाद में करने का प्रयास किया गया है, किन्तु कभी-कभी अति गूढ़ता को तरल की तरह सरल करना कठिन हो जाता है, फिर भी मुझे विश्वास है कि सुधी पाठक के लिए यह कोई कठिनाई नहीं होगी।

यह किताब न केवल उनके लिए है जो अध्यात्म के मार्ग पर चल पड़े हैं, बल्कि उनके लिए भी है जो इस पर अभी क़दम रख रहे हैं, उनके लिए भी है जो अध्यात्म के प्रवेश द्वार में जिज्ञासा से अभी झांक ही रहे हैं, और उनके लिए भी है जिनका अध्यात्म से कोई ख़ास वास्ता तो नहीं है, लेकिन जो जीवन के अबूझ प्रश्नों का उत्तर चाहते हैं – जैसे जीवन का प्रयोजन क्या है, ईश्वर ने दुख

क्यों बनाया है, हम बीमार क्यों पड़ते हैं, दुर्घटनाएं क्यों होती हैं, अच्छाई-बुराई क्या होती है, क्या स्वर्ग-नरक जैसी कोई जगह होती है, क्या पुनर्जन्म होता है, और सबसे बड़ी समस्या कि यह यौनाचार इतना अच्छा होते हुए भी इतना बुरा क्यों है? और, और भी बहुत कुछ।

तो, अगर यह किताब आपने उठाई है तो निश्चित रूप से आपके वे प्रश्न ईश्वर तक पहुंचे हैं जो कि आपके मन में घुमड़ते रहे हैं, और इस बातचीत के जरिए, इस किताब के जरिए, ईश्वर आपके प्रश्नों के उत्तर देना चाहता है।

अचलेश चन्द्र शर्मा
मेरठ
acsharma-trans@gmail.com

प्रस्तावना

आप एक अद्‌भुत अनुभव करने जा रहे हैं। आप ईश्वर के साथ बातचीत करने जा रहे हैं। हां भई हां, मैं जानता हूं ... यह असंभव है – आप शायद ऐसा सोचते हों (या ऐसा आपको बताया गया हो) कि ऐसा होना संभव नहीं है। आप ईश्वर से बात तो कर सकते हैं, लेकिन उसके साथ बात बिलकुल नहीं कर सकते। मेरा मतलब है कि ईश्वर *पलट* कर आपसे बात करने वाला नहीं है। नहीं ना? और, कम से कम एक नियमित व दैनिक वार्तालाप के रूप में तो कभी नहीं!

मैं भी यही सोचा करता था। फिर, यह किताब मेरे साथ घटित हुई। यह मैं बिलकुल सही कह रहा हूं। यह किताब मेरे *द्वारा* लिखी नहीं गई है, यह मुझे अकस्मात घटित हुई है। और, इसको पढ़ते हुए यह आपको भी घटित हो जाएगी क्योंकि *हम सभी उसी सत्य की ओर ले जाए जाते हैं जिसके लिए हम तैयार व तत्पर होते हैं।*

मेरा जीवन बड़ा आसान रहता अगर अपने मन के गुबार को मैं अपने मन में ही रखने वाला होता। लेकिन, केवल इसी एक कारण से यह किताब मुझे घटित नहीं हुई। और, इस किताब के कारण जो भी परेशानियां मुझे हुई हों (जैसे इस किताब में उल्लिखित सच्चाईयों को स्वयं अपने अतीत में न जीने के कारण मुझे क़ाफ़िर, नास्तिक, फ़रेबी, कपटी, पाखंडी कहा गया, और साथ ही शायद सबसे ग़लत बात तो यह रही कि मुझे पवित्र आत्मा भी कहा गया) लेकिन अब इस सिलसिले को रोक पाना मेरे बस कि बात नहीं है, और ना ही मैं ऐसा करना चाहता हूं। इस पूरी प्रक्रिया से बाहर निकल जाने के अवसर मुझे मिले भी हैं, लेकिन मैंने ही उनका इस्तेमाल ही नहीं किया। इस किताब के बारे में, दुनिया जो कह रही है उसके साथ जाने के बजाय मैंने उस बात के साथ जाने का निश्चय किया जो मेरी अंदर की आवाज़ कह रही है।

मेरी अंदर की आवाज़ कहती है कि यह किताब कोई अनर्गल प्रलाप नहीं है, यह किसी हताश आध्यात्मिक कल्पना का अति आयास भी नहीं है, और

न ही यह किसी व्यक्ति द्वारा अपने पथ-भ्रष्ट जीवन को परिशोधित करने की अपनी तलाश को स्वयं ही सिद्ध करने जैसा कुछ है। हां, मैंने इन सभी बातों के बारे में सोचा है – इन में से हरेक के बारे में। इसीलिए, जब यह किताब केवल एक पाण्डुलिपि के रूप में ही थी तब मैंने इस सामग्री को कुछ लोगों को पढ़ने के लिए दिया था। वे तो हिल गए थे, कुछ तो रो पड़े थे, लेकिन साथ ही इसमें मौजूद प्रमोद और हास्य बोध पर हंसे बिना भी वे नहीं रह सके थे। और, उन्होंने बताया कि इसे पढ़ कर उनका तो जीवन ही बदल गया था। सचमुच, वे मंत्र-मुग्ध रह गए थे। उनमें शक्ति का संचार हो गया था।

बहुतों ने तो यहां तक कहा कि इसे पढ़ कर उनका तो रूपान्तरण ही हो गया था।

तब मैंने यह जाना कि यह किताब हर किसी के लिए है और इसे प्रकाशित किया ही *जाना चाहिए,* क्योंकि यह किताब उन सभी के लिए एक अद्भुत उपहार है जो प्रश्न करने का मूल्य व महत्व सचमुच समझते हैं और उन प्रश्नों के उत्तर वाक़ई जानना चाहते हैं, और यह उन सभी के लिए भी है जो अपने हृदय की पूरी ईमानदारी के साथ, अपनी आत्मा में उत्कंठा लिए हुए हैं और खुले मन से सत्य की खोज-यात्रा पर चल रहे हैं। हम में से काफ़ी लोग ऐसे हैं जो इस अवस्था में चल रहे हैं।

इस किताब में, अगर सभी नहीं तो ऐसे अधिकांश ऐसे प्रश्न शामिल हैं जो कि हमारे मन में अक्सर उठा करते हैं – जीवन के बारे में, प्रेम के बारे में, प्रयोजन व क्रियान्वयन के बारे में, लोगों और रिश्तों के बारे में, अच्छाई व बुराई के बारे में, अपराध व पाप के बारे में, क्षमादान व मुक्ति के बारे में, ईश्वर की ओर ले जाने वाले पथ व नरक की ओर ले जाने वाले मार्ग के बारे में ... हर बात के बारे में। यह किताब सीधी बात करती है – यौनाचार, शक्ति, अधिकार, पैसा, विवाह, संतान, तलाक, जीवनचर्या, स्वास्थ्य, भवितव्य, अतीत और वर्तमान के बारे में ... हर बात के बारे में। यह एक जिज्ञासा भरा अन्वेषण करती है – युद्ध व शांति के बारे में, ज्ञान व अज्ञान के बारे में, देने व लेने के बारे में, सुख व दुख के बारे में। यह नज़र डालती है मूर्त व अमूर्त पर, दृश्य व अदृश्य पर, और सत्य व असत्य पर।

आप ऐसा कह सकते हैं कि यह किताब उपरोक्त विषयों पर अवतरित होने वाले 'ईश्वर के नवीनतम शब्द' हैं – हालांकि कुछ लोगों को इस बात पर आपत्ति हो सकती है, ख़ासकर उन लोगों को जो कि मानते हैं कि ईश्वर ने तो लगभग 2000 साल से बोलना बंद कर दिया है। और अगर उसने बोलना जारी भी रखा हुआ होता तो वह किसी पवित्र आत्मा के माध्यम से, या किसी ओझा के माध्यम से या किसी ऐसे व्यक्ति के माध्यम से बोलता है जो 30 वर्षों से ध्यान लगाता आ रहा हो, या 20 वर्षों से एक संत सरीखा जीवन बिताता आ रहो, या कम

से कम 10 वर्षों से एक भले मानस की तरह तो रह ही रहा हो (क्योंकि ऐसी किसी भी श्रेणी में मैं नहीं आता हूं)।

लेकिन, सत्य तो यह है कि ईश्वर हर किसी से बात करता है – अच्छे से भी और बुरे से भी, संत से भी और असंत से भी। और, निश्चय ही, इनके बीच वाले हम सब से भी। आप अपना ही उदाहरण ले लीजिये। ईश्वर आपके जीवन में कई बार और कई प्रकार से आया है, और अब एक बार फिर इस किताब के रूप मे आया है। आपने यह प्राचीन कहावत तो कई बार सुनी ही होगी: शिक्षार्थी जब तैयार व तत्पर हो जाता है तब शिक्षक उस तक स्वयं आ पहुंचता है। यह किताब हमारे लिए शिक्षक बन कर, गुरु बन कर अवतरित हुई है।

यह किताब जब मुझे घटित होनी शुरू ही हुई थी, तब मैं जान गया था कि मैं ईश्वर से ही बात कर रहा हूं – प्रत्यक्ष रूप से, व्यक्तिगत रूप से, और निर्विवाद रूप से। और, यह भी कि ईश्वर मेरे प्रश्नों के उत्तर बिलकुल मेरी समझने की क्षमता के अनुरूप ही दे रहे थे। यानी, मुझे उस तरह से और उस भाषा में उत्तर दिये जा रहे थे जिसमें, ईश्वर को मालूम था, कि मैं समझ सकूंगा। अब मैं जान गया हूं कि अपने जीवन में जो कुछ भी मुझे प्राप्त हुआ है *वह मुझे ईश्वर से ही प्राप्त हुआ है,* और अब वह सब उसने एक साथ मिला करके, एकत्र करके उन तमाम प्रश्नों के उत्तरों को एक ओजस्वी और सम्पूर्ण संकलन के रूप में मुझे दे दिया है जो कि मेरे मन में उठते रहे थे।

और, इन प्रश्नोत्तरों के सिलसिले के दौरान मुझे यह भी भान हो गया था कि एक किताब तैयार हो रही है – एक ऐसी किताब जो प्रकाशन के इरादे से बनाई जा रही है। और हुआ भी यही, ख़ासकर इस बातचीत के उत्तरार्ध के दौरान (फरवरी 1993 में) मुझे बता दिया गया था कि दरअसल *तीन* किताबें प्रकाशित होनी हैं:

1. पहली किताब मुख्य रूप से व्यक्तिगत विषयों पर होगी जिसका फ़ोकस व्यक्ति के जीवन में आने वाली चुनौतियों तथा सुअवसरों पर रहेगा।

2. दूसरी किताब इस धरती के भौगोलिक-राजनैतिक तथा आत्मज्ञान संबंधी विषयों पर होगी, और उन चुनौतियों के बारे में होगी जो आज विश्व के सामने मुंह बाये खड़ी हैं।

3. तीसरी किताब सर्वोच्च विधान के सार्वभौमिक सत्यों के बारे में, और आत्मा के समक्ष आने वाली चुनौतियों तथा सुअवसरों के बारे में होगी।

आपके हाथों में पहली वाली किताब है। यह फरवरी 1993 में तैयार हुई थी।

मुझे यह स्वीकारोक्ति करने की आवश्यकता लग रही है कि इस किताब में समाहित प्रज्ञापूर्ण विषय-वस्तु को पढ़ कर और पुनः पढ़ कर, मुझे अपने इस जीवन पर बहुत शर्म आ रही है जिस पर कि निरंतर की गयी ग़लतियों के और ग़लत कामों के दाग़ लगे हुए हैं, उनमें से कुछ तो बहुत शर्मनाक बर्ताव वाले हैं और कुछ उन चयनों तथा निर्णयों वाले हैं जिन्हें, निश्चित ही, अन्य लोग दुखद मानते हैं, अक्षम्य मानते हैं। हालांकि मुझे इस बात का अत्यंत खेद है कि औरों के दुख के जरिए, मुझे यह ज्ञान मिला, लेकिन उनसे जो मैंने जाना, जो मैंने सीखा उसका आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। और, मैंने यह भी जाना कि मेरे लिए जानने को *अभी भी* बहुत कुछ है – और वह भी मेरे जीवन में आने वाले लोगों के कारण। इतनी मंद गति से सीखने के लिए मैं सभी से क्षमा मांगता हूं। तथापि, ईश्वर ने मुझे प्रोत्साहित किया है कि अपनी विफलताओं के लिए मैं खुद को क्षमा कर दूं और भय तथा अपराध भावना के साथ न जिऊं, बल्कि प्रयास करूं – निरंतर प्रयास करता रहूं – ताकि एक अत्यंत उत्कर्ष दृष्टि के साथ जी सकूं।

मैं जानता हूं कि ईश्वर हम सब से यही चाहता है।

नील डोनाल्ड वाल्श
सैंट्रल पॉइंट, ओरेगॉन
क्रिसमस 1994